International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 117-122

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 117-122
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-11-2021
Accepted: 03-12-2021

हर्ष वर्धन सिंह
शोध छात्र, संस्कृत विभाग, नेहरु मेमोरियल शिवनारायण दास कालेज, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
हर्ष वर्धन सिंह
शोध छात्र, संस्कृत विभाग, नेहरु मेमोरियल शिवनारायण दास कालेज, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

पाणिनीय सन्धियों का सरल विन्यास

हर्ष वर्धन सिंह

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा अनेक भाषाओं की जननी तथा विश्व की एक अत्यन्त समृद्ध भाषा है। इस का अध्ययन विना व्याकरण ज्ञान के सम्भव नहीं है। संस्कृत भाषा का प्रमाणिक व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी महामुनि पाणिनि द्वारा लिखा गया है। संस्कृत विश्व की एक ऐसी भाषा है जिस का व्याकरण सर्वाङ्गीण एवं पूर्ण परिष्कृत कहा जा सकता है। संस्कृत व्याकरण के कुछ प्रमुख नियमों का उल्लेख करने का यह एक प्रयास है–

अच्(स्वर) सन्धि

1. अक् से सवर्ण अच् परे होने पर पूर्व + पर के स्थान में दीर्घ एकादेश हो जाता है। अर्थात् ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ से परे क्रमशः ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ आये तो अ + अ = आ, ई + ई = ई, उ + उ = ऊ, ऋ + ऋ = ॠ, ऌ + ऌ = ॡ आदेश हो जाता है[1]–

दैत्य + अरिः = दैत्यारिः
श्री + ईशः = श्रीशः
विष्णु + उदयः = विष्णूदयः
होतृ + ऋकारः = होतॄकारः
दण्ड + अग्रम् = दण्डाग्रम्
मधु + उदके = मधूदके
भूमि + ईशः = भूमीशः
परम + अर्थः = परमार्थः
भानु + उदयः = भानूदयः
वेद + अभ्यासः = वेदाभ्यासः
गिरि + ईशः = गिरीशः
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
कदा + आगता = कदागता
महती + इच्छा = महतीच्छा
हरि + इन्द्रः = हरीन्द्रः
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः
सती + ईशः = सतीशः

उपरोक्त उदाहरणों में ह्रस्व/दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आये हैं। इसलिए 42 'अकः सवर्णे दीर्घः' 06/01/97 सूत्र से सवर्ण दीर्घ होकर आ, ई, ऊ, ॠ हो गया है। सामान्य रूप से ऌकार का उदाहरण नहीं मिलता है।

2. इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है, अच् परे होने पर[2] –

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः
मधु + अरिः = मध्वरिः
अभि + उदयः = अभ्युदयः
गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा
वधु + आगमनम् = वध्वागमनम्
यदि + अपि = यद्यपि

लृ + आकारः = लाकारः
पितृ + अर्चा = पित्रर्चा
वधू + अलङ्कारः = वध्वलङ्लकारः
उपरोक्त उदाहरणों में 15'इको 'यणचि' 06/01/77 सूत्र से इ के स्थान पर य् , उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर र्, लृ के स्थान पर ल् आदेश हो गया है।

3. अच् (स्वर) परे होने पर एच् (ए ओ ऐ औ) के स्थान पर क्रमशः अय् अव् आय, आव हो जाता है[3]–
हरे + ए = हरये
विष्णो + ए = विष्णवे
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः
भो + अति = भवति
पो + अनः = पवनः
चे + अन = चयन
लो + अनः = लवणः
भौ + उकः = भावुकः
गै + अकः = गायकः
पो + इत्र = पवित्र
शे + अनम् = शयनम्
भो + अनः = भवनः
बालौ + अत्रः = बालावत्रः
उपरोक्त उदाहरणों में 22 **'एचोऽयवायावः'** 06/01/78 सूत्र द्वारा स्वर परे होने पर ए, ओ, ऐ, औ को क्रमशः अय, अव, आय, आव हो गया है।

4. अ वर्ण से इकार, उकार, ऋकार तथा लृकार परे होने पर। अ + इ = ए, अ + उ = ओ, अ + ऋ = अर्, अ + लृ = अल् हो जाता है[4]–
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः
तव + लृकारः = तवल्कारः
गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः
परीक्षा + उत्सवः = परीक्षोत्सवः
वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः
रमा + ईशः = रमेशः
सूर्य + उदयः = सर्वोदयः
गण + ईशः = गणेशः
देव + ऋषिः = देवर्षिः
मम + लृकारः = ममल्कारः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
यथा + इच्छम् = यथेच्छम्
उमा + ईशः = उमेशः
महा + ऋषिः = महर्षिः
यज्ञ + उपवीतम् = यज्ञोपवीतम्
महा + ईष्वासः = महेष्वासः
विकल + इन्द्रियः = विकलेन्द्रियः
महा + ईशः = महेशः
कण्ठ + उच्चारणः = कण्ठोच्चारणः
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः
पाप + ऋद्धिः = पापर्द्धिः
उपरोक्त उदाहरणों में 27 'आद् गुणः'06/01/84 सूत्र से अ + इ = ए, अ + उ = ओ, अ + ऋ = अर, अ + लृ = अल् हो गया है।

5. अ वर्ण से एच् (ए, ओ, ऐ, औ) परे होने पर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश हो जाता है। अर्थात् अ + ए = ऐ, अ + ओ = औ, अ + ऐ = ऐ, अ + औ = औ हो जाता है[5]–
कृष्ण + एकत्वम् = कृष्णैकत्वम्
गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = कष्णौत्कण्ठ्यम्
पञ्च + एते = पञ्चैते
जन + एकता = जनैकता
तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलौदनम्
तथा + एव = तथैव
महा + औजसः = महौजसः
महा + औषधः = महौषधः
उपरोक्त उदाहरणों में अवर्ण के बाद ए, ओ, ऐ, औ आये हैं। अतः 33 'वृद्धिरेचि' 06/01/85 सूत्र से अ + ए = ऐ, अ + ओ = औ, अ + ऐ = ऐ, अ + औ = औ हो गया।

6. पदान्त एङ् अर्थात् पदान्त में ए, ओ हो और उस से परे ह्रस्व अकार होने पर पूर्व + पर के स्थान पूर्वरूप आदेश हो जाता[6] –
हरे + अव = हरेऽव
विष्णो + अव = विष्णोऽव
अग्ने + अत्र = अग्नेऽत्र
वायो + अत्र = वायोऽत्र
गुरवे + अदात् = गुरवेऽदात्
नमो + अस्तु = नमोऽस्तु
स्थाने + अन्तरतमः = स्थानेऽन्तरतमः
उपरोक्त उदाहरणों में पदान्त ए अथवा ओ के बाद अकार आया है, इसलिए 43 **'एङः पदान्तादति'** 06/01/105 सूत्र द्वारा पूर्वरूप आदेश हो गया।
हल्(व्यञ्जन) सन्धि

7 सकार ,तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के साथ शकार, चवर्ग(च्,छ्,ज्,झ्,ञ्) का पहले या बाद में योग होने पर सकार, तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर शकार, चवर्ग(च्,छ्,ज्,झ्,ञ्) आदेश हो जाता है[7]–
सद् + जनः = सज्जनः
कस् + चित् = कश्चित्
शार्ङ्गिन् + जयः =शार्ङ्गिञ्जयः
बृहद् + झरः = बृहज्झरः
दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः
उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः
उत् + चारणम् = उच्चारणम्
उपरोक्त उदाहरणों में 62'स्तोःश्चुना श्चुः'8/4/39 सूत्र से सकार,तवर्ग के साथ शकार,चवर्ग का योग होने पर सकार,तवर्ग को शकार,चवर्ग आदेश हो गया।

8 सकार ,तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के साथ षकार टवर्ग(टठडढण) का पहले या बाद में योग होने पर सकार, तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर षकार टवर्ग(टठडढण) आदेश हो जाता है[8] –
तत् + टीका = तट्टीका
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
उद् + डयनम् = उड्डयनम्
कृष् + नः = कृष्णः
दुष् + तः = दुष्टः
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे
विष् + नुः = विष्णुः
पेष् + ता = पेष्टा
समिध् + अत्र = समिदत्र

समिध + आधानम् = समिदाधानम्
सम्राट् + इच्छति = सम्राडिच्छति
षट् + आननः = षडाननः
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः
विद्युत् + गच्छति = विद्युद्गच्छति
त्रिष्टुभ् + आदिः = त्रिष्टुबादिः उपरोक्त उदाहरणों में सकार ,तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के साथ षकार टवर्ग(टठडढण) का योग होने के कारण 64 'ष्टुना ष्टुः' 8/04/40 सूत्र से सकार तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग आदेश हो गया ।

9. लकार परे होने पर तवर्ग के स्थान पर पर–सवर्ण आदेश हो जाता है अर्थात् तवर्ग से जब लकार परे होगा तो तवर्ग के स्थान पर लकार का सवर्ण आदेश किया जाएगा। लकार का सवर्ण लकार ही है। इसलिए तवर्ग के स्थान पर लकार ही आदेश होगा[9]–
उद् + लिखितम् = उल्लिखितम्
तद् + लय = तल्लय
विद्वान् + लिखति = विद्वाल्ँलिखति
विपद् + लीन = विपल्लीन
कश्चिद् + लभते = कश्चिल्लभते
कुशान् + लुनाति = कुशाल्ँलुनाति
महान् + लाभ = महाल्ँलाभ
उद् + लेखः = उल्लेखः
धनवान् + लुनीते = धनवाल्ँलुनीते
हनुमान् + लङ्कां दहति = हनुमाल्ँलङ्कां दहति
जगद् + लीयते = जगल्लीयते
तद् + लीला = तल्लीला
तद् + लीन = तल्लीनः
विद्युत् + लेखा = विद्युल्लेखा
उपरोत उदाहरणों में 69 '**तोर्लि**' 08/04/59 सूत्र द्वारा तवर्ग के स्थान पर लकार हो गया है। अनुनासिक वर्ण के स्थान पर अनुनासिक लकार ही हुआ है।

10. पद के अन्त में यदि वर्ग के प्रथम,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थ वर्ण अथवा श्,ष्,स्,ह् वर्ण हो तो उनके स्थान पर वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है तथा ष् के स्थान पर ड् और श् के स्थान पर ज् हो जाता है। बाद में खर् वर्ण अर्थात् वर्ण का प्रथम,द्वितीय, पंचम् वर्ण तथा श,ष,स वर्ण नहीं होने चाहिए [10]–
वाक् + ईशः = वागीशः
जगत् + ईशः = जगदीशः
अनुष्टुभ् + एव = अनुष्टुबेव
अच् + अन्तः = अजन्तः
षष् + आगच्छति = षडागच्छति
उपरोक्त उदाहरणों में 67 'झलां जशोऽन्ते' – 08/02/39 सूत्र से पदान्त वर्ग के प्रथम ,द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण को वर्ग का तीसरा वर्ण हो गया है। यदि वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण बाद में होता है तो पदान्त को तीसरा वर्ण नहीं होता, क्योंकि 'खरि च' – 08/04/54 सूत्र उसे वर्ग का पहला वर्ण कर देता है तथा पंचम् वर्ण बाद में होने पर 68 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' 08/04/44 सूत्र उसे पंचम् वर्ण कर देता है ।

11. वर्ग का पांचवां वर्ण परे होने पर, पदान्त वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवे वर्ण को, अनुनासिक हो जाता है[11]–
एतद् + मुरारि = एतन्मुरारि
अग्निचित् + नयति = अग्निचिन्नयति
तद् + न = तन्न
दिग् + नाग = दिङ्नाग
षड् + मासाः = षण्मासाः
एतद् + मनोहर = एतन्मनोहरः
सत् + मार्ग = सन्मार्गः
विपद + मय = विपन्मयः
यद् + नैति = यन्नैतिः
धिक् + मूर्ख = धिङ्मूर्खः
अप् + मात्र = अम्मोत्रः
नदीतटात् + मातु = नदीतटान्मातुः
उपरोक्त उदाहरणों में 68 **'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'** 08/04/44 सूत्र से पदान्त को अनुनासिक हो गया।

12. यदि वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चौथे वर्ण के बाद 'ह' आया हो तो 'ह' के स्थान पर विकल्प से पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है[12]–
वाक् + हरि = वाग् + हरि (झलां जशोन्ते) वाग्हरिः/वाग्घरिः
तद् + हानि = तद्धानिः
अच् + हीन = अज्झीनम्
मधुलिड् + हसति = मधुलिड्ढसति
अब् + हस्ती = अब्भस्ती
अज् + ह्रस्वदीर्घप्लुतः = अज्झस्वदीर्घप्लुतः
स्याड् + ह्रस्वश्च = स्याडढ्रस्वश्च
दिग् + हस्ती = दिग्घस्ती
सम्पद् + हर्ष = सम्पद्धर्षः
रत्नमुड् + हरति = रत्नमुड्ढरति
वणिग् + हस्ती = वणिग्घस्ती
दूराद् + हूते = दूराद्धूते
समुद् + हर्ता = समुद्धर्ता
उपरोक्त उदाहरणों में 75 'झयो होऽन्यतरस्याम्' 08/04/61 सूत्र द्वारा हकार के स्थान पर पूर्व–सवर्ण हो गया है।

13. वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण से परे शकार और शकार से परे कोई स्वर अथवा ह,य,व,र,ल हो तो शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हो जाता है तथा तवर्ग के स्थान पर चकार हो जाता है[13]–
तद् + शिव = तज् + शिव (स्तोः श्चुना श्चुः)
= तच् + शिव (खरि च)
= तच्छिवः/तच्शिवः
मधुलिट् + शेते = मधुलिट्छेते/ मधुलिट्शेते
वाक् + शेते = वाक्छेते/ वाक्शेते
मत् + श्वशुर = मच्छवशुर/मच्श्वशुर
यावत् + शक्यम् = यावच्छक्यम/ यावच्शक्यम
जगत् + शान्ति = जगच्छान्ति/ जगच्शान्ति
तद् + श्रुत्वा = तच्छुत्वा/ तच्श्रुत्वा
कश्चित् + शेते =कश्चिच्छेते/ कश्चिच्शेते
प्राक् + शेते = प्राक्छेत/ प्राक्शेत
उपरोक्त उदाहरणों में 76 'शश्छोऽटि' 08/04/62 सूत्र द्वारा शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हो गया।
नोट : 'शश्छोऽटि' सूत्र 'झलां जशोऽन्ते', 'स्तोः श्चुना श्चुः' 'खरि च' इन तीनों सूत्रों की दृष्टि में असिद्ध है। अतः सबसे पहले झलां जशोऽन्ते, फिर 'स्तोः श्चुना श्चुः' फिर 'खरि च' तदन्तर 'शश्छोऽटि' सूत्र प्रवृत्त होगा–

14. वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण तथा श, ष, स वर्ण परे होने पर अपदान्त नकार, मकार को अनुस्वार हो जाता है तथा वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम् वर्ण, य,व,र,ल परे होने पर अनुस्वार को पर–सवर्ण आदेश हो जाता है[14]–
अन् + कित = अंकित = अङ्कितः
अन् + चित = अंचित = अञ्चितः
कुन् + ठित = कुंठित = कुण्ठितः
दाम् + त = दमंत = दान्तः
गुम् + फित = गुं + फित = गुम्फितः

भुन + क्ते = भुंक्ते = भुङक्ते
गम् + ता = गंक्ता = गन्ता
उपरोक्त उदाहरणों में पहले अपदान्त नकार, मकार को 78 'नश्चाऽपदान्तस्य झलि' 08/03/24 सूत्र द्वारा अनुस्वार हुआ, तत्पश्चात 79'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' 08/04/57 सूत्र द्वारा पर–सवर्ण हो गया।

15. वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण तथा य,व,ल वर्ण परे होने पर पदान्त अनुस्वार को विकल्प से पर–सवर्ण हो जाता है[15]–
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि = त्वं करोषि/त्वङ्करोषि
पुस्तकम् + पठति = पुस्तकं पठति = पुस्तकं पठति/पुस्तकम्पठति
गुरुम् + नमति = गुरुं नमति = गुरुं नमति/गुरुन्नमति
शत्रुम् + जयति = शत्रुं जयति = शत्रुं जयति/शत्रुञ्जयति।
उपरोक्त उदाहरणों में पहले 77'मोऽनुस्वारः'8/3/23 सूत्र से मकारान्त पद को अनुस्वार हो गया। तत्पश्चात 80 'वापदान्तस्य' 08/04/58 सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से पर–सवर्ण हो गया।

16. वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा ष्, श्, स् वर्ण परे होने पर वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण के स्थान पर वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है[16]–
भेद् + तुम = भेत्तुम
छेद् + तव्यम = छेत्तव्यम्
उद् + थाय = उत्थाय
लिभ् + सा = लिप्सा
सत् + कारः = सद् कारः = सत्कारः
सत् + पात्रम् =सद् पात्रम् = सत्पात्रम्
दिक् + पालः = दिग् पालः = दिक्पालः
उपरोक्त उदाहरणों में 74'खरि च' 08/04/54 सूत्र से खर वर्ण परे होने पर झलों के स्थान पर चर् हो गया।

17. पदान्त अथवा अपदान्त ह्रस्व से छकार परे होने पर ह्रस्व और छकार के बीच में च् का आगम हो जाता है[17]–
शिव + छाया = शिवच्छाया
शोध + छात्र = शोधच्छात्र
वि + छेद = विच्छेद
भूपति + छाया = भूपतिच्छाया
उपरोक्त उदाहरणों में 101 'छे च' 06/01/71 सूत्र से तुक् (त्) का आगम होता है शिवत् + छाया तत्पश्चात 'झलां जशोऽन्ते' से सूत्र से त् को द् आदेश शिवद् + छाया – पुनः 'स्तोः श्चुनाश्चुः' सूत्र के दकार को जकार शिवज् + छाया, पुनः 'खरि च' सूत्र से जकार को चकार होकर शिवच्छाया रूप बना।

18. पदान्त दीर्घ से छकार परे होने पर दीर्घ और छकार के बीच विकल्प से चकार का आगम हो जाता है[18]–
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया/लक्ष्मीछाया
उपरोक्त उदाहरण में 102 'पदान्ताद्वा' 06/01/74 सूत्र से तुक् (त्) का आगम, लक्ष्मीत् + छाया, तत्पश्चात् 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से तकार को दकार, पुनः 'स्तोःश्चुना श्चुः' सूत्र से दकार को जकार, पुनः 'खरि च' सूत्रं से जकार को चकार होकर 'लक्ष्मीच्छाया' रूप सिद्ध हुआ।
विसर्ग सन्धि

19. अवर्ण पूर्वक विसर्ग से परे ह्रस्व अकार के अतिरिक्त अन्य स्वर आने पर विसर्ग का लोप हो जाता है[19]–
सरः + आसीत = सर आसीत
रामः + आगच्छति = राम आगच्छति
कृष्णः + एति = कृष्ण एति
बालः + उत्तिष्ठ = बाल उत्तिष्ठ
बालः + इच्छति = बाल इच्छति
सूर्यः + उदेति = सूर्य उदेति
देवः + आगच्छति = देव आगच्छति
अर्जुनः + उवाच = अर्जुन उवाच
पर्वतखण्डः + आसीत = पर्वतखण्ड आसीत्
रुषितः + इव = रुषित इव
योगिराजः + आगत्य = योगिराज आगत्य
अरुणः + एषः = अरुण एषः
उपरोक्त उदाहरणों में 108 'भो भगो अधो अपूर्वस्य योऽशि'8/3/17 सूत्र से अवर्ण पूर्वक 'रु' के स्थान पर यकार आदेश हुआ। तत्पश्चात 30 'लोपः शाकल्यस्य' 8/3/19सूत्र से यकार का वैकल्पिक लोप प्राप्त हुआ।

20. विसर्ग से पूर्व 'अ,आ' को छोड़ कोई अन्य स्वर होने पर तथा बाद में कोई स्वर अथवा वर्ग का तृतीय,चतुर्थ,पञ्चम् वर्ण अथवा ह्,य्,व्,र्,ल् वर्ण परे होने पर विसर्ग के स्थान रेफ आदेश हो जाता है। अव्यय तथा ऋकारान्त सम्बोधन सम्बन्धी विसर्ग से पहले अ,आ हो तब भी विसर्ग को रेफ आदेश हो जाता है–
हरिः +इति = हरिरिति
साधुः + असौ = साधुरसौ
मुनिः + इति = मुनिरिति
भानुः + असौ = भानुरसौ
वधूः + एषा =वधूरेषा
हरिः +अवदत् = हरिरवदत्
बटुः + असौ = बटुरसौ
अजागरीः + इति = अजागरीरिति
वायुः + अजायत = वायुरजायत
द्विगुः + अपि =द्विगुरपि
धेनुः + धावति = धेनुर्धावति
धेनुः + गच्छति =धेनुर्गच्छति
हरेः + द्रव्यम् = हरेर्द्रव्यम्
एतैः + भक्षितम् = एतैर्भक्षितम्
गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम्
विष्णोः + माया = विष्णोर्माया
सुबाहुः + विशाललोचन = सुबाहुर्विशाललोचनः
मातुः + हस्तात् = मातुर्हस्तोत्
अव्यय सम्बन्धी विसर्ग.....
पुनः + अत्र = पुनरत्र
प्रातः + गच्छति = प्रातर्गच्छति
ऋकारान्त सम्बोधन सम्बन्धी विसर्ग.....
पितः + वन्दे = पितर्वन्दे

21. ह्रस्व अकार से परे विसर्ग और विसर्ग के बाद पुनः ह्रस्व अकार आने पर विसर्ग के स्थान पर 'ओ' हो जाता है तथा पर वाले अकार के स्थान पर अवग्रह(ऽ) का चिह्न लगा देते हैं[20]–
अः + अ = ओ
शिवः + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः
बालः + अत्र = बालोऽत्र
सः + अपि = सोऽपि
पुरुषो + अधुना = पुरुषोऽधुना
रामः + अस्मि = रामोऽस्मि
छात्रः + अयम् = छात्रोऽयम्
राज्ञः + अभिषेकः = राज्ञोऽभिषेकः
मः + अनुस्वारः = मोऽनुस्वारः
बालकः + अयम् = बालकोऽयम्
शिवः + अत्र = शिवोऽत्र
रामः + अयम् = रामोऽयम्
देवः + अधुना = देवोऽधुना
कः + अयम् = कोऽयम्

सः + अयम् = सोऽयम्
सः + अवदत् = सोऽवदत्
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग बनने से पूर्व रेफ था। हम ने यहाँ उसी रेफ का ग्रहण किया है।106 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' 06/01/109 सूत्र से रेफ को 'उ' आदेश हो जाता है। तत्पश्चात 'आद् गुणः' सूत्र से अ+उ = ओ हुआ। शिवो + अर्च्य। अब 43'एङः पदान्तादति'6/1/105 सूत्र से पूर्वरूप करके 'शिवोऽर्च्यः' प्रयोग सिद्ध हुआ।

22. ह्रस्व अकार से विसर्ग परे होने पर और विसर्ग से परे हश् (ह, य, व, र, ल तथा वर्ग के तृतीय,चतुर्थ,पंचम वर्ण) वर्ण हो तो विसर्ग को ओ आदेश हो जाता है[21]–
रामः + हसति = रामो हसति
रामः + नमति = रामोनमति
मनः + रथः = मनोरथः
बालः + यति = बलो यति
शिवः + वन्द्यः = शिवो वन्द्यः
बालः + रौति = बालो रौति
बुधः + लिखति = बुधो लिखति
बालः + ऊकारं पश्यति = बालो ऊकारं पश्यति
मूर्खः + मुह्यति = मूर्खौ मुह्यति
भक्तः + नमतीश्वरम् = भक्तो नमतीश्वरम्
सूर्यः + भाति = सूर्यो भाति
नरः + गच्छति = नरो गच्छति
कः + बालः = को बालः
नृपः + दास्यति = नृपो दास्यति
एकः + महान् = एको महान्
भालूकः + वनान्तात् = भालूकोवनान्तात्
मृगः + धवति = मृगोधावति
मेघः + गर्जति = मेघो गर्जति
सरः + वरः = सरोवरः
पयः + धरः = पयोधरः
रामः + जयति = रामो जयति
बालकः + हसति =बालको हसति
लोपः + हलि = लोपो हलि
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग बनने से पूर्व रेफ था। यहाँ उसी रेफ का ग्रहण लिया गया है। 107 'हशि च'–06/01/110 सूत्र से अ से परे रेफ और रेफ से परे हश् होने पर रेफ को उ आदेश हो जाता है। तत्पश्चात 27'आद् गुणः'6/1/84 सूत्र से अ + उ मिलकर 'ओ' हो जाते है।

23. अ, इ, उ से परे विसर्ग और विसर्ग से परे रेफ होने पर विसर्ग का लोप हो जाता है तथा अ,इ,'उ' को दीर्घ हो जाता है[22]–
हरिः + रम्यः = हरी रम्यः
शम्भुः + राजते = शम्भू राजते
निः + रस = नीरस
सवितुः + रश्मय = सवितू रश्मय
विंशतिः + रुप्यकाणि =विंशती रुप्यकाणि
कविः + रचयति = कवी रचयति
गुरुः + राजते = गुरू राजते
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग बनने से पूर्व रेफ था। 111 'रो रि' – 08/03/14 सूत्र (रेफ का रेफ परे होने पर लोप हो जा है।) से पूर्व रेफ का लोप हो गया और 112 'ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' 06/03/110 सूत्र से पूर्व अण् (अ, इ, उ) को दीर्घ हो गया।

24. रेफ का रेफ परे होने पर लोप हो जाता है और लोप वाले रेफ से पूर्व वाले अ, इ, उ को दीर्घ हो जाता है[23]–
पुनर् + रमते = पुना रमते
नर् + रम्य = ना रम्य
अन्तर् + राष्ट्रिय = अन्ताराष्ट्रिय
उपरोक्त उदाहरणों में 111 'रो रि' 08/03/14 सूत्र (रेफ का रेफ परे होने पर लोप हो जाता है) से पूर्व रेफ का लोप हो गया तथा 112 'ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' 06/03/110 सूत्र से अण् (अ) को दीर्घ हो गया।

25. विसर्ग से तकार, थकार अथवा सकार परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हो जाता है[24]–
विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता
बालः + तत्र = बालस्तत्र
बालः + स्वपिति = बालस्स्वपिति
बालः + थूत्करोति = बालस्थूत्करोति
रामः + त्राता = रामस्त्राता
छात्रः + तिष्ठति = छात्रस्तिष्ठति
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद 'त' अथवा 'थ' आया है इसलिए 103 'विसर्जनीयस्य सः'8/3/34 सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश हो गया (खर् परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश) ।

26. विसर्ग से चकार, छकार अथवा शकार परे होने पर विसर्ग के स्थान पर शकार हो जाता है [25]–
गौः + चरति = गौस्चरति = गौश्चरति
वृक्षः + छादयति = वृक्षस्छादयति = वृक्षश्छादयति
पुरुषः + चिनोति = पुरुषस्चिनोति = पुरुषश्चिनोति
रामः + चिनोति = रामस्चिनोति = रामश्चिनोति
बालः + चलति = बालस्चलति = बालश्चलति
कृष्णः + छात्रः = कृष्णस्छात्रः = कृष्णश्छात्रः
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद च, छ वर्ण आया है इसलिए पहले 103'विसर्जनीयस्य सः'8/3/34 सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश हुआ, तत्पश्चात 62'स्तोःश्चुना श्चुः'8/4/39 सूत्र से सकार को शकार हो गया।

27. विसर्ग से ट्, ठ् परे होने पर विसर्ग के स्थान पर षकार हो जाता है [26]–
बुधः + टीकते = बुधष्टीकते
देवः + ठक्कुरः = देवष्ठक्कुरः
रामः + टीकते = रामष्टीकते
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद ट्, ठ् आया है। इसलिए पहले 103'विसर्जनीयस्य सः' 8/3/34सूत्र से विसर्ग को सकार हुआ। तत्पश्चात 64'ष्टुना ष्टुः'8/4/40 सूत्र से सकार को षकार हो गया।

28. विसर्ग से क, ख, प, फ परे होने पर विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा क्रमशः जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय आदेश होते हैं [27]–
बालः + करोति = बालः करोति/बाल करोति
नरः + खादति = नरः खादति/नर खादति
नृपः + पाति = नृपः पाति/नृप पाति
वृक्षः फलति = वृक्षः फलति/वृक्ष फलति
उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद क्, ख, प, फ आया है। इसलिए 98'कुप्वोः क पौ च'8/3/37 सूत्र से विर्सग के स्थान पर विसर्ग ही रहा अथवा जिह्वामूलीय/उपध्मानीय आदेश हो गया।

29. विसर्ग से श्, ष्, स्, परे होने पर विसर्ग को क्रमशः श्, ष्, स् हो जाता है अथवा विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है [28]–
रामः + सीतां पश्यति = रामस्सीतां पश्यति / रामः सीतां पश्यति
सर्पः + सरति = सर्पस्सरति / सर्पः सरति
मूर्खाः + सन्ति = मूर्खास्सन्ति / मूर्खाःसन्ति

उपरोक्त उदाहरणों विसर्ग के बाद सकार आया है इसलिए यहाँ 103'विसर्जनीयस्य सः' (08/03/34)सूत्र से विसर्ग को सकार हुआ, जिस दशा में विसर्ग को सकार नहीं हुआ, वहाँ 104'वा शरि' – 08/03/36 सूत्र से विकल्प से विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहा।

पुरुषः + शेते = पुरुषश्शेते/पुरुषः शेते
हरिः + शेते = हरिश्शेते/हरिःशेते

उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद शकार आया है। अतः पहले 103'विसर्जनीयस्य सः' 8/3/34 से विसर्ग को सकार आदेश हुआ, तत्पश्चात 62'स्तोः श्चुना श्चुः'8/4/39 से सकार को शकार हो गया। जिस दशा में शकार नहीं हुआ वहाँ 104'वा शरि'8/3/36 से विकल्प से विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहा।

नृपः + षष्ठः = नृपष्षष्ठः / नृपः षष्ठः
रामः + षष्ठः = रामष्षष्ठः / रामः षष्ठः

उपरोक्त उदाहरणों में जहाँ विसर्ग के बाद षकार आया है, वहाँ पहले 'विसर्जनीयस्य सः' 08/03/34 से पहले विसर्ग को सकार हुआ तत्पश्चात 64'ष्टुना ष्टुः'8/4/40 से सकार को षकार हो गया। जिस दशा में षकार नहीं हुआ वहाँ 104'वा शरि' 08/03/36 से विकल्प से विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहा।

30. यदि अव्यय या ऋकारान्त शब्द के सम्बोधन के साथ विसर्ग से पहले कोई भी स्वर हो और बाद में वर्ग का तृतीय, चतुथ, पंचम् वर्ण हो अथवा कोई स्वर अथवा ह,य,व,र,ल हो तो विसर्ग के स्थान पर रेफ हो जाता है–

पुनः + अत्र = पुनरत्र
प्रातः + गच्छति = प्रातर्गच्छति
निः + धनः = निर्धनः
दुः + उपयोगः = दुरुपयोगः
पितः + वन्दे = पितर्वन्दे
मातः + वन्दे = मातर्वन्दे

31. एषः अथवा सः के बाद कोई भी व्यंजन वर्ण अर्थात् हल् वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता[29] –

सः +वर्णिलिङ्गी =स वर्णिलिङ्गी
सः + किंसखा = स किंसखा
एषः + विष्णुः = एष विष्णुः
सः + शम्भुः = स शम्भुः
सः + हसति = स हसति
एषः + हसति = एष हसति
सः + करोति = स करोति
एषः + करोति = एष करोति
सः + पठति = स पठति
एषः + पठति = एष पठति
सः + शेते = स शेते
एषः + शेते =एष शेते
एषः + गच्छति = एष गच्छति
सः + तत्र = स तत्र
सः + खादति = स खादति
एषः + गच्छति =एष गच्छति
एषः + लिखति =एष लिखति
एषः + प्रकाशः = एष प्रकाशः

उपरोक्त उदाहरण में 114 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि' 1/1/128 सूत्र से 'एषः' और –'सः' के विसर्ग का हल् परे होने के कारण लोप हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 42 'अकः सवर्णे दीर्घः' 06/01/97
2. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 15'इको 'यणचि' 06/01/77
3. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 22 'एचोऽयवायावः' 06/01/78
4. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 27 'आद् गुणः'06/01/84
5. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 33 'वृद्धिरेचि' 06/01/85
6. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 43 'एङः पदान्तादति' 06/01/105
7. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 62'स्तोःश्चुना श्चुः'8/4/39
8. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 64 'ष्टुना ष्टुः' 8/04/40
9. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 69 'तोर्लि' 08/04/59
10. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 67 'झलां जशोऽन्ते' – 08/02/39
11. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 68 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' 08/04/44
12. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 75 'झयो होऽन्यतरस्याम्' 08/04/61
13. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 76 'शश्छोऽटि' 08/04/62
14. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 78 'नश्चाऽपदान्तस्य झलि' 08/03/24, 79'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' 08/04/57
15. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 77 'मोऽनुस्वारः'8/3/23, 80 'वापदान्तस्य' 08/04/58
16. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 74 'खरि च' 08/04/54
17. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 101 'छे च' 06/01/71
18. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 102 'पदान्ताद्वा' 06/01/74
19. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 108 'भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि'8/3/17, 30 'लोपः शाकल्यस्य' 8/3/19
20. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 106 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' 06/01/109, 43'एङः पदान्तादति'6/1/105
21. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 107 'हशि च'–06/01/110
22. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 111 'रो रि'–08/03/14, 112 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' 06/03/110
23. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 111 'रो रि' 08/03/14, 112 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' 06/03/110
24. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 103 'विसर्जनीयस्य सः'8/3/34
25. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 103'विसर्जनीयस्य सः'8/3/34, 62'स्तोःश्चुना श्चुः'8/4/39
26. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 103'विसर्जनीयस्य सः' 8/3/34, 64'ष्टुना ष्टुः'8/4/40
27. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 98'कुप्वोः क पौ च'8/3/37
28. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 103'विसर्जनीयस्य सः' 08/03/34, 104'वा शरि'– 08/03/36
29. लघु सिद्धान्त कौमुदी सूत्र सं0 114 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि' 1/1/128